ईगर अकीमुश्किन

यह सभी कुत्ते हैं

रादुगा प्रकाशन · मास्को

ईगर अकीमुश्किन

यह सभी कुत्ते हैं

चित्रकार: अ० केलेइनिकोव
अनुवादक: संगमलाल मालवीय
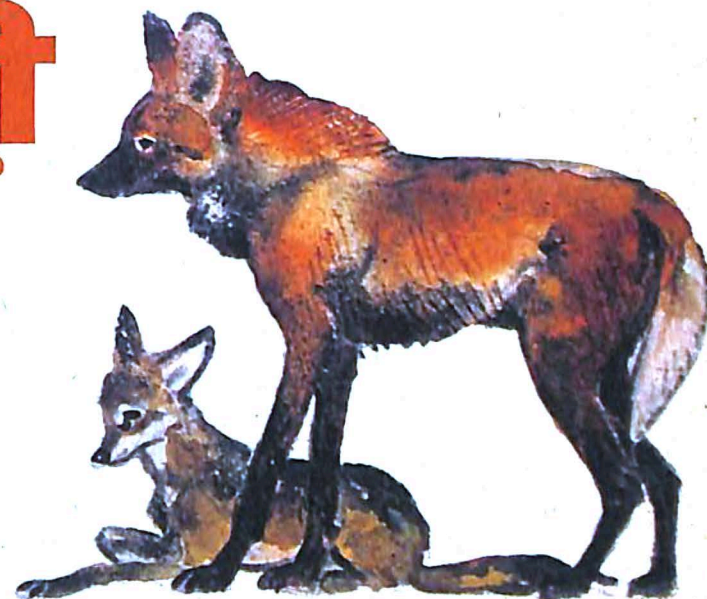
रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

कुत्ता या श्वान परिवार के सभी जानवर हिंसक होते हैं। भेड़िया, सियार और लोमड़ी – यह सभी एक ही परिवार के जानवर हैं। इन्हें श्वान परिवार के अन्तर्गत रखा जा सकता है। केवल अन्टार्कटिक क्षेत्र को छोड़कर ये सभी महाद्वीपों में पाए जाते हैं। ये जानवर जंगलों, स्तेपियों, पहाड़ों, मैदानों, टुण्ड्रा और रेगिस्तानी इलाकों में रहते हैं।

इस परिवार के जानवरों की टांगें लम्बी और सुगठित होती हैं। नाखून मज़बूत होते हुए भी नुकीले नहीं होते। ये दौड़ने में तेज़ होते हैं। इनमें से कुछ तो 65 किलोमीटर प्रति घंटे तक की गति से दौड़ सकते हैं।

ये भारी बालवाले भूरे या लाल रंगों में पाए जाते हैं। कुछ जानवर धारीदार होते हैं (अफ़्रीका में पाई जानेवाली सियारों की एक किस्म धारीदार होती है)। कुछ जानवर चितकबरे होते हैं। लकड़बग्घा काले, सफ़ेद और पीले धब्बोंवाला होता है। दुनिया भर में यह तीन रंगोंवाला एकमात्र जंगली जानवर होता है।

श्वान परिवार में सबसे छोटा जानवर फ़ेनेक है। यह बिल्ली के बच्चे से बड़ा नहीं होता। सबसे बड़ा जानवर भेड़िया है। बड़े भेड़िये का वज़न अस्सी किलोग्राम तक हो सकता है।

यह पुस्तक कुत्तों के निकटतम संबंधी वन्य जीवों के बारे में तुम्हें बताएगी।
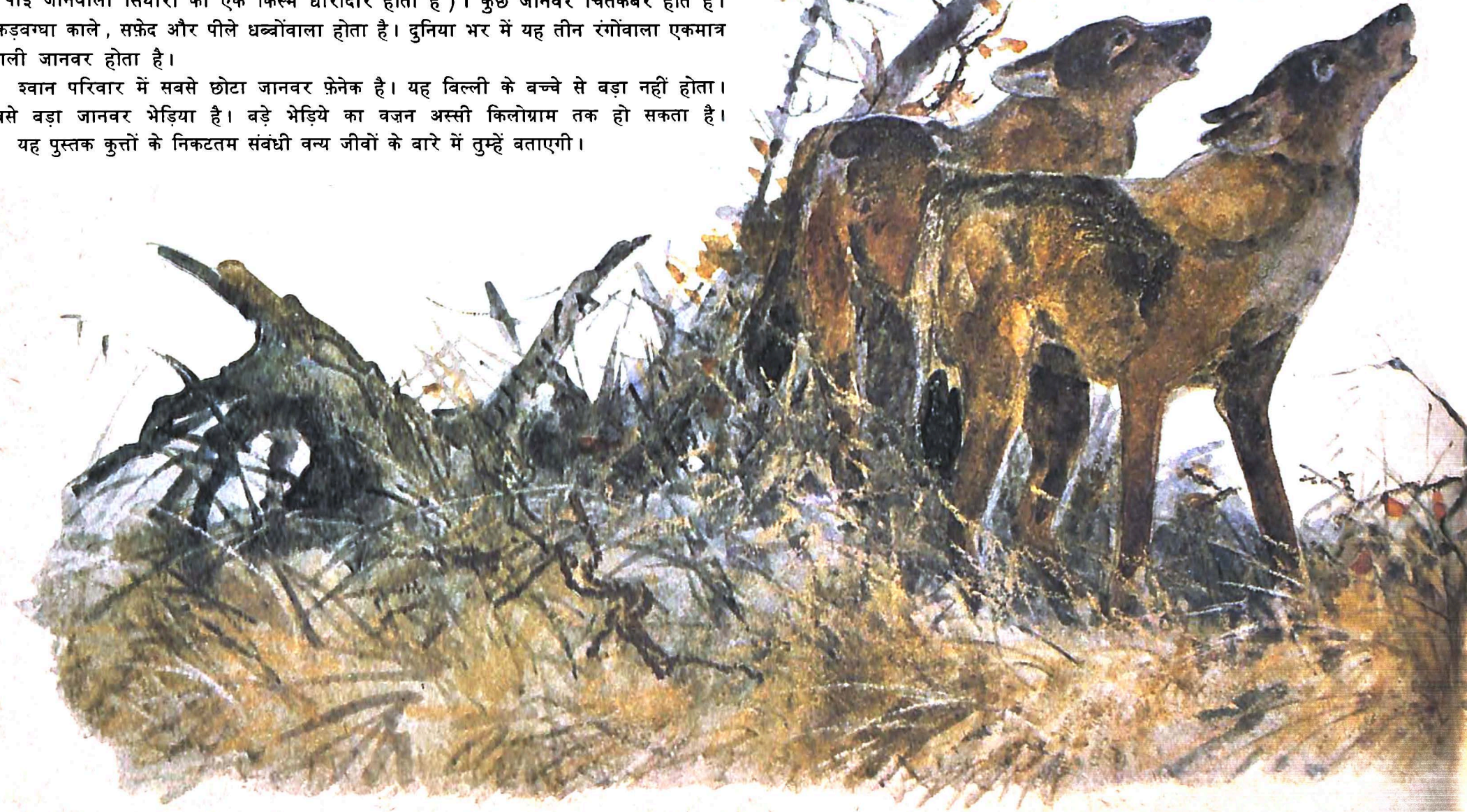
भेड़िय

बड़े या छोटे, सभी तरह के कुत्तों की शुरुआत भेड़ियों से होती है।

श्वान परिवार का सबसे ताकतवर जानवर भेड़िया है। अपनी पीठ पर बकरी या भेड़ को उठाकर यह इतनी तेज़ी से भाग सकता है कि इसका पीछा करना तेज़ घोड़े पर बैठकर भी मुश्किल होता है। भेड़िये का जबड़ा बहुत मज़बूत होता है। यह बड़ी हड्डी को चूर-चूर कर सकता है।

भेड़िये जंगल में ही नहीं रहते। ये बड़े मैदानी इलाकों और खेतों में भी रहना पसन्द करते हैं। अक्सर ये रात में शिकार करते हैं, लेकिन एकान्त का फ़ायदा उठाकर ये दिन में भी शिकार करने से नहीं चूकते।

रूस में ठीक ही कहते हैं: भेड़िया का पेट तो उसकी टांगें ही भरती हैं। कभी-कभी शिकार की तलाश में यह दिन में 60 किलोमीटर तक की दौड़ लगा जाता है!

और इस भाग-दौड़ के बाद यह कोई ज़रूरी नहीं कि उसे सफलता मिले। वन्य जीवन में जानवर के लिए आसानी से भोजन जुटा पाना संभव नहीं। यही कारण है कि जब भेड़िया कोई अच्छा शिकार मारता है तो जी भरकर खा लेता है। यह दस किलो मांस हज़म कर सकता है।

लेकिन भेड़िये को भूखा रहना भी आता है। कभी-कभी तो यह शिकार के अभाव में पूरा-पूरा सप्ताह भूखा रह जाता है। एक बार शिकारियों से छिपा हुआ एक भेड़िया सत्रह दिन तक भूखा बैठा रहा।

पतझड़ और जाड़े के मौसम में भेड़िये झुण्ड में इकट्ठा होते हैं। वसन्त के दिनों में नर और मादा के जोड़े अलग-अलग रहने लगते हैं। वृक्ष के गिरने से बने गड्ढे या अपनी मांद में मादा भेड़िया पांच, छह या सात-सात बच्चे देती है। यहां तक कि बच्चों की संख्या दस तक पहुंच सकती है। कभी-कभी दो ही बच्चे होते हैं। मादा भेड़िया अपनी मांद नहीं छोड़ती। नर भेड़िया अपनी मादा की अच्छी तरह देखभाल करता है। खुद भूखा रहकर भी यह अपनी मादा के लिए आहार जुटाता है।

ग्रीष्म ऋतु के अन्त तक भेड़िये के बच्चे काफ़ी बड़े हो जाते हैं और माता-पिता के साथ शिकार पर जाने लगते हैं।

साधारण सियार

सियार एक ख़ौफ़नाक जानवर नहीं होता। देखने में भेड़िये से मिलता-जुलता होते हुए भी यह कद में उसका आधा होता है।

सोवियत संघ में सियार सिर्फ़ काकेशिया के पर्वतीय इलाकों और मध्य एशिया में रहते हैं, क्योंकि वहां की जलवायु गर्म है। ये सर्दी बर्दाश्त नहीं कर पाते।

लेकिन टर्की, भारत और ईरान जैसे गर्म देशों में सियार बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। इनकी चोरी की हरकतों से लोग बिल्कुल तंग रहते हैं।

सियार शहर और गांवों के नज़दीक रहने के अभ्यस्त होते हैं। वे इस ताक में लगे रहते हैं कि किस चीज़ की हिफ़ाज़त नहीं की जा रही है और मौका पाते ही चोरी करने से नहीं चूकते। वे मुर्गीखाने से मुर्गियां दबोच ले जाते हैं। खेत में तरबूज़ पके नहीं कि वे उन्हें चबा डालते हैं। यदि मक्के की फ़सल पककर तैयार है, तो वे चटपट थोड़े भुट्टे ही चुरा ले जाते हैं। बगीचे में ये मीठे-मीठे अंगूर बड़े मज़े से खाते हैं।

और हां, ये धूर्त भी कम नहीं होते! अगर सियार कौवे या नीलकण्ठ पक्षी का शिकार करना चाहता है, तब वह सड़क पर मुर्दा जानवर की नकल करके लेट जाता है। पक्षी सियार को मरा जानकर उसका गोश्त खाने के लिए नीचे उतर आता है। धूर्त सियार उसे धर दबोचता है और बस, मूर्ख पक्षी खुद शिकार बन गया!

सियार नदियों और झीलों के किनारे रहना भी पसन्द करते हैं। लेकिन वहां पर झपट्टा मारने या चुराने के लिए कुछ नहीं होता। इसलिए ये मेढ़कों, छिपकलियों या अन्य कीड़े-मकोड़ों पर हाथ साफ़ करते हैं। यहां तक कि टिड्डियों का शिकार भी करते हैं। इन्हें टिड्डियां खाना पसन्द है।

पतझड़ के दिनों में छोटे-छोटे समूह में सियारों का जमघट लगता है। तब अपने संख्या-बल के कारण ये खुद को बहादुर समझ बैठते हैं और बकरियों तथा भेड़ों पर हमले का जोखिम उठाने लगते हैं।

वसन्त में मादा सियार बच्चे देती हैं। तीन, चार, पांच और यहां तक कि नौ-नौ बच्चे होते हैं। एकान्त झाड़ियों, सरकण्डे या कभी-कभी बिज्जू अथवा साही की छोड़ी हुई मांद में मादा सियार बच्चे जनती हैं।

बच्चे तेज़ी से बढ़ते हैं। वे अपने माता-पिता के साथ सिर्फ़ पतझड़ तक रहते हैं। अगले वर्ष वे खुद माता-पिता बन जाते हैं।
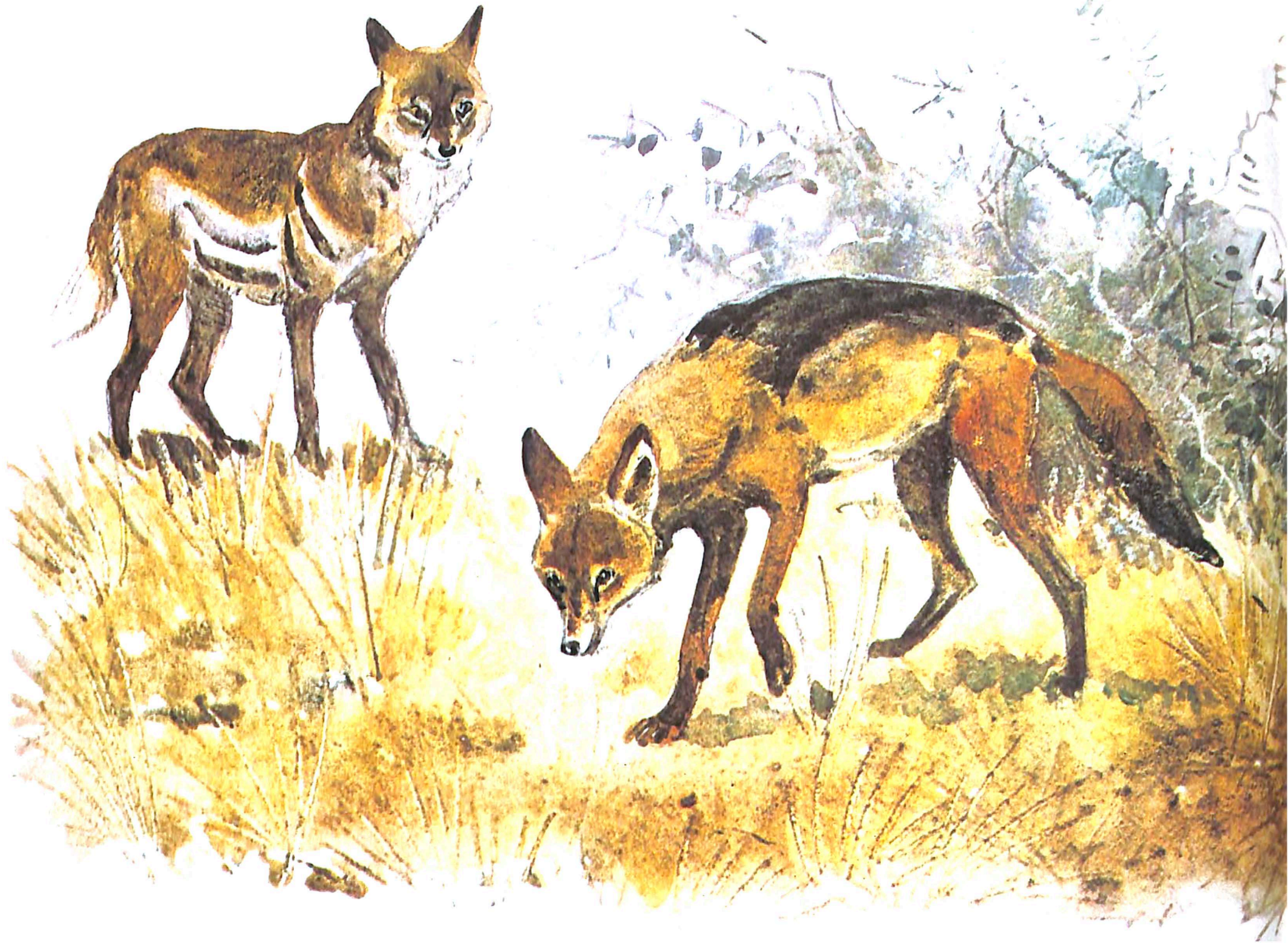
काली पीठवाला सियार

इस नस्ल का सियार धूसर लाल रंग का होता है जबकि इस जानवर की पीठ रजतवर्णी काली होती है।

काली पीठवाले सियार अफ़्रीका के घास के मैदानों में पाए जाते हैं, जहां सिंह रहते हैं। जब सिंह अपने शिकार पर जाते हैं, तब ये सियार एकदम चुपके-चुपके उनके पीछे हो लेते हैं। सिंह द्वारा हिरन या ज़ेबरा का शिकार करते ही सियार हुआं-हुआं करने लगते हैं। इस प्रकार से ये खुशी प्रगट करते हैं।

जब तक सिंह अपने भोजन में जुटा रहता है, सियार बड़े धैर्य से एक ओर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करते हैं। जैसे ही सिंह खा चुकता है और आराम के लिए ठण्डी जगह की तलाश में निकल पड़ता है, तो सियार बचे हुए शिकार पर टूट पड़ते हैं। सिंह सियारों को नहीं छूते। वे उनसे घृणा करते हैं।

लेकिन काली पीठवाले सियार खुद भी बहुत अच्छे शिकारी होते हैं। झुण्ड बनाकर ये छोटे-छोटे हिरनों पर हमले करते हैं और भेड़ या अजगर तक से भिड़ सकते हैं अगर वे बड़े आकार के न हों। उथली झील में शान्ति से विचरण करनेवाले फ़्लामिन्गो का शिकार करना भी ये भलीभांति जानते हैं।

काली पीठवाले सियार गांवों में भी शिकार करते हैं, चूज़े चुराने और किसी भी खाने लायक चीज़ पर झपट्टा मारने से नहीं चूकते। स्वाभाविक है कि लोगों को यह पसन्द नहीं। वे सियारों को गोली का निशाना बनाते हैं और उनकी खूबसूरत रोएंदार खाल से कालीन बनाते हैं।

अफ़्रीकी सियारों की दो और किस्में होती हैं। पहली किस्मवाले के बगलों पर हल्की धारियां होती हैं। श्वान परिवार का यह एकमात्र धारीदार जानवर है। दूसरी किस्म है अबीसीनियाई लाल सियारों की, जिनकी टांगें लम्बी और थूथन नुकीला होता है।
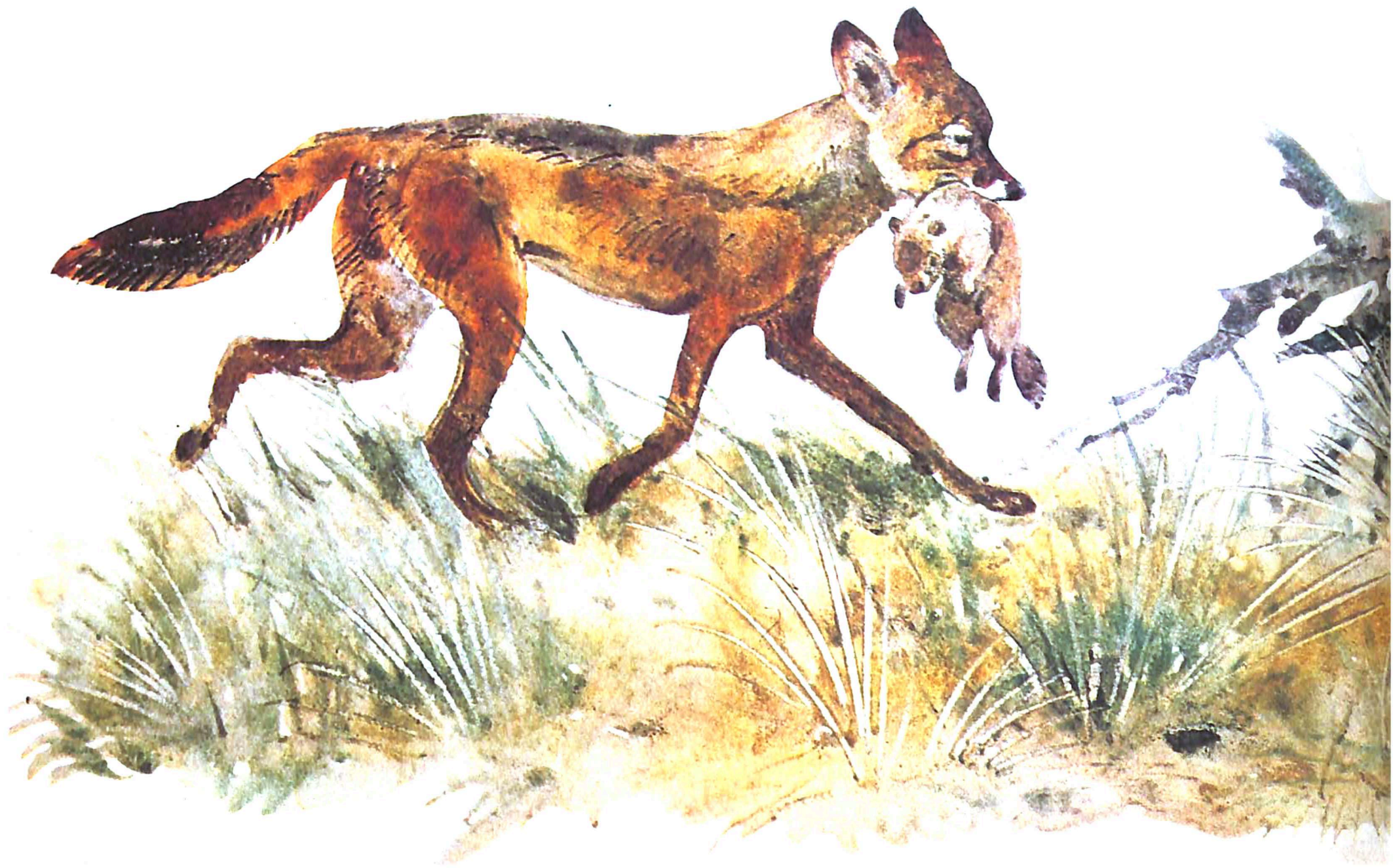
काइओट

काइओट भेड़िये की एक ऐसी किस्म है जो घास के मैदानों में रहती है। निस्सन्देह यह जानवर भेड़िये का निकटतम संबंधी है, लेकिन इसकी ऊंचाई सियार के बराबर होती है। काइओट उत्तरी अमरीका का निवासी है।

सियारों की तरह काइओट भी गांवों के नज़दीक रहते हैं और उनके तौर-तरीके आपस में समान होते हैं। ये खाने से बचा हुआ आहार ढूंढ़ते रहते हैं और चोरी करते हैं। इसके अलावा रात भर हुआं-हुआं का अविराम प्रलाप करते हैं। लेकिन यह कोई संगीत कार्यक्रम नहीं होता। ये गुर्राते, विलाप करते, भौंकते और लगातार हुआं-हुआं करते नींद हराम कर देते हैं।

लेकिन जब काइओट की नस्ल गायब होने लगी तो वैज्ञानिकों ने उनकी उपयोगिता को समझा। काइओट चूहे और हानिकारक जीव-जन्तुओं को नष्ट कर डालते हैं। अब काइओट को संरक्षित वन्य जीव घोषित किया जा चुका है।

मादा काइओट और नर काइओट आजीवन साथ-साथ रहते हैं। स्तेपी में मादा अपनी मांद के भीतर बच्चे देती है। लेकिन जंगल में इनका रहन-सहन श्वान परिवार की दूसरी किस्मों से बिल्कुल अलग होता है। वे एक बड़े तनेवाले खोखले वृक्ष को ढूंढ़ निकालते हैं। खोखल ज़मीन से एक या डेढ़ मीटर ऊंचा होता है। फिर भी भावी मां इसी में रहती है और बच्चे देती है।

मांद का अभाव होने पर एक विचित्र बात देखने को मिलती है। ऐसे में दो काइओट मादाएं अपने-अपने नवजात शावकों के साथ एक ही मांद के अन्दर रह लेती हैं और पारस्परिक सद्भाव बनाये रखती हैं। अगर कोई मादा काइओट किसी वजह से मर जाती है, तो दूसरी मादा काइओट उसके बच्चों की अपनी सन्तान की तरह ही देखभाल करती है।

दो महीने की उम्र के ही बच्चों को माता-पिता चूहे, खरगोश, पक्षी और मेढ़क का शिकार करना सिखलाते हैं। ग्रीष्म ऋतु के खत्म होते ही इनका प्रशिक्षण समाप्त हो जाता है। अब युवा काइओट आत्मनिर्भर जीवन शुरू करते हैं। हरेक अपनी मनमर्ज़ी के अनुसार जीने लगता है। कभी-कभी जानवर अपने जन्म स्थान से सौ किलोमीटर या इससे अधिक दूरी तक चले जाते हैं।
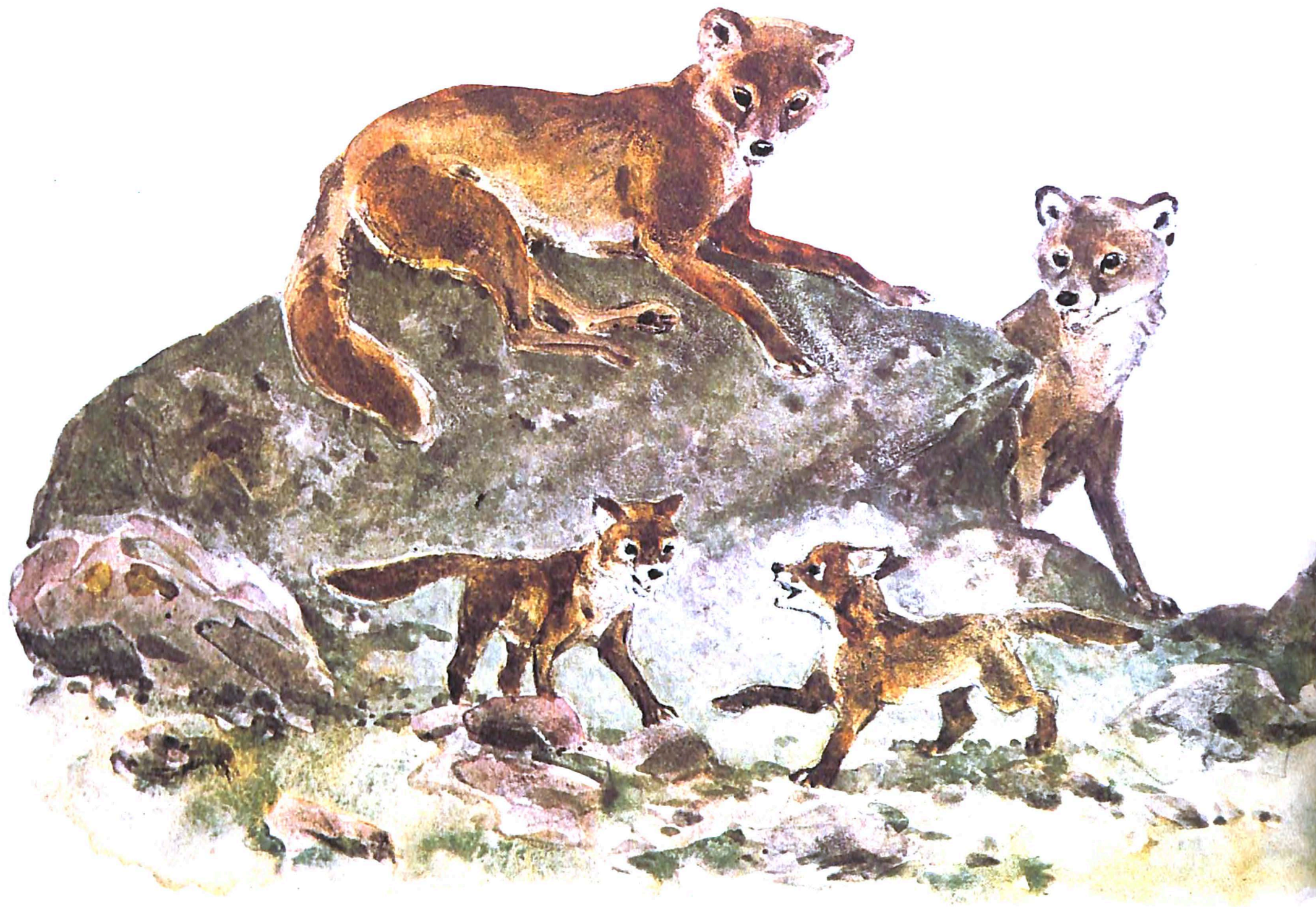
ध्रुवीय लोमड़ी

ये लोमड़ियां एशिया, युरोप और उत्तरी अमरीका के टुण्ड्रा मैदानों में पाई जाती हैं। यहां से जब तब घूमती हुई ये सुदूर उत्तर के बर्फ़ीले आर्कटिक क्षेत्र तक चली जाती हैं।

जाड़े में ध्रुवीय लोमड़ी का रंग सफ़ेद होता है। बर्फ़ में इन्हें मुश्किल से देखा जा सकता है। यह सच है कि इनमें से कुछ के रोयें नीलाभ सुरमई, सुरमईपन लिए भूरे और काले रंग के भी होते हैं। इनको नीले रंगवाली ध्रुवीय लोमड़ी कहते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में ये लोमड़ियां भूरी-भूरी सी होती हैं। केवल पेट पर उजले रंग का फ़र होता है। फ़र की यह वेशभूषा सीधी सरल होते हुए भी ग्रीष्म ऋतु में टुण्ड्रा की प्रकृति के रंगों से मिलती-जुलती है।

ध्रुवीय लोमड़ी मांद खोदना पसन्द करती है। हर साल वह अपने रहने के लिए एक नया घर बनाती है। अन्यथा इसके पास न तो कड़ी ठण्ड से बचने के लिए अपनी जगह ही हो और न ही नन्हे-मुन्नों को पालने के लिए स्थान। अक्सर यह जानवर अपना घर छोटे-बड़े पत्थरों के पास या मिट्टी के टीलों के बीच में बनाता है। हर कहीं मांद खोद पाना आसान काम नहीं होता, ख़ास तौर पर पथरीली या दलदल-भूमि पर।

कभी-कभी ध्रुवीय लोमड़ी के दस-दस बच्चे तक होते हैं। उनका पालन-पोषण करने में बच्चों का पिता सहयोग देता है। वही आहार जुटाता है। अगर दुश्मन परिवार का सुख-चैन छीनने की कोशिश करता है तो वह हर तरह अपने परिवार की रक्षा करता है। वह भूंकता हुआ दुश्मनों का ध्यान हटाता है।

ध्रुवीय लोमड़ियां रात-दिन टुण्ड्रा के इलाके में घूमा करती हैं। ये इस क्षेत्र के जीव-जन्तुओं – चूहे और खरगोश का शिकार करती हैं। ये मछलियों का आहार भी करती हैं, बशर्ते शिकार हाथ लग जाये। आहार की खोज में ध्रुवीय लोमड़ियां सफ़ेद भालुओं के पीछे-पीछे चला करती हैं, ठीक सिंह के पीछे चलनेवाले सियार की तरह। बाद में उनके खाने से बचे हुए शिकार से खुद अपना पेट भरती हैं।

अगर आहार ज़रूरत से ज़्यादा होता है तो ध्रुवीय लोमड़ी उसे ज़मीन में गाड़ देती है और अपने नुकीले थूथन से उस जगह को ठीक से ढंक देती है ताकि कोई जानवर छिपे हुए आहार का अन्दाज़ न लगा सके। लेकिन ध्रुवीय लोमड़ी इस जगह को भूलती नहीं। यहां पर बाद में आकर इसे खा लेती है।

लाल लोमड़ी

पुरानी कहावत है कि लोमड़ी सात भेड़ियों को मूर्ख बना सकती है। धूर्त लोमड़ी के बहुत से किस्से मशहूर हैं। लेकिन यह सच नहीं है। भेड़िया कहीं अधिक धूर्त और बुद्धिमान होता है।

लोमड़ी का मुख्य आहार चूहे हैं। यह किसान के इन दुश्मनों का शिकार बड़ी कुशलता से करती है। दिन भर में पचास चूहे तक पकड़ सकती है।

लेकिन अगर चूहे नहीं मिलते तो लोमड़ी जंगली मुर्गी, खरगोश और तीतर का शिकार करती है। यहां तक कि यह हिरन के बच्चों पर भी हमले कर सकती है। आहार के मामले में यह नखरेबाज़ नहीं—कुछ भी खा सकती है: टिड्डे, गुबरैले, केंचुए, घोघे वगैरह। लोमड़ी किस्म-किस्म की बेरियों को भी पसन्द करती है।

लोमड़ी न तो बिना वजह किसी का पीछा करती है, और न ही अकारण दुश्मनी। मसलन यह बिज्जू की मांद में जाकर उसके साथ रह सकती है। ऐसी मांद में दर्जनों आवागमन के रास्ते और छेद होते हैं। उसमें कई तरह के जीव-जन्तुओं को भी रहने भर की जगह मिल जाती है। जंगली बिल्लियां, वनबिलाव, ऊदबिलाव सब एक साथ उसमें सुख-चैन से रहते हैं।

आम तौर पर लाल लोमड़ी ज़िद्दी स्वाभाव का जानवर नहीं है। यह खुले मैदानों, पहाड़ों, जंगलों, रेगिस्तानों में रहता है। बड़े नगरों के पार्कों में भी रह सकता है।

क्या तुमने कभी लोमड़ी के नवजात शावक को देखा है?

ये नन्हे-मुन्ने बच्चे भूरे रोयोंवाले होते हैं। महीने भर तक मादा लोमड़ी इन्हें सिर्फ़ दूध पिलाती है। इसके बाद ये मांद से बाहर निकलकर आसपास घूमने-फिरने लगते हैं। ये बड़े खुशमिज़ाज होते हैं। नर लोमड़ी उनके लिए आहार इकट्ठा करता है। लेकिन वह मांद के पास नहीं आता, बस आहार को नज़दीक ही लाकर रख देता है। मादा लोमड़ी खुद ही खाना तलाशकर इसे बच्चों को खिलाती है।

अत्यन्त कम अवधि में ये जानवर अपने नन्हे-मुन्नों को शिकार करना सिखला देते हैं। मात्र दो सप्ताह के अन्दर सारा आखेट प्रशिक्षण पूरा हो जाता है। लोमड़ी के बच्चे अपने माता-पिता के साथ अधिक समय तक नहीं रहते।

रैकून

छोटी-छोटी टांगों और झबरे बालवाले रैकून बिल्कुल बिज्जू की तरह के होते हैं। रैकून के थूथन पर दोनों तरफ़ "गलमुच्छे" होते हैं। भालू की तरह यह जाड़े भर खर्राटे लेता है। लेकिन उसकी तरह बेखबर होकर नहीं सोता। प्रायः अपनी मांद से बाहर निकलकर ताज़ी हवा में सांस लेता है।

रैकून की मातृभूमि सोवियत संघ का सुदूर पूर्व इलाका ही है। सोवियत जीव वैज्ञानिकों ने रैकूनों को उनके मूल निवास स्थान से दूर पश्चिम में बसाने का निर्णय किया है। आजकाल रैकून मास्को के निकटवर्ती क्षेत्रों, उक्राइन, बाल्टिक और मोलदावियाई जनतंत्रों में पाए जाते हैं। फिर यहां से ये पोलैण्ड और फ़िनलैण्ड तक फैले हुए हैं। रैकून एक जगह पर टिककर रहना पसन्द नहीं करते। धीरे-धीरे चलते हुए ये बहुत दूर तक जा सकते हैं। ये नदी और झील की तटवर्ती सघन झाड़ियों, झुरमुटों को पसन्द करते हैं।

यह जानवर श्रेष्ठ तैराक होता है!

रैकून तरह-तरह का खाना खाते हैं – चूहे, मेढ़क, छिपकलियां, मछलियां, कीड़े-मकोड़े और पक्षी। खेद की बात है कि यह जानवर चिड़ियों के घोंसले उजाड़ता है। यह किस्म-किस्म के फलों का भी शौकीन होता है।

रैकून बिज्जू की तरह फुर्ती से अपनी मांद खोद सकता है। लेकिन युरोप में अपने नये आश्रयस्थल में आकर यह अपना वक्त नष्ट नहीं करता। अगर इसे पत्थरों के बीच उपयुक्त दरार, किसी जानवर की पुरानी मांद या गिरे हुए वृक्ष की जड़ों के बीच "गुफा" मिल जाती है तो यह वहीं पर रहने लग जाता है।

रैकून के कई-कई पिल्ले होते हैं, कभी-कभी उन्नीस-उन्नीस तक। रैकून नर-मादा दोनों मिलकर उनकी देखभाल करते हैं।

बुशडाग

बुशडाग की टांगें बहुत छोटी होती हैं, लेकिन इसका आकार लम्बा होता है। इसके छोटे-छोटे कान और नन्ही सी दुम होती है। मुंह चपटा सा होता है। यह जानवर देखने में विचित्र लगता है।

बुशडाग सिर्फ़ दक्षिण अमरीका में पाया जाता है। इसे घनी झाड़ियों या उष्णकटिबंधीय वन के विशालकाय वृक्षों की उलझी हुई जड़ों के बीच में रहना पसन्द है। अन्य जानवर ऐसी दरारों वगैरह में आसानी से फंस सकता है, लेकिन छोटी टांगोंवाला बुशडाग अत्यन्त फुर्तीला कुत्ता है। बल खाते हुए यह किसी भी तरह की दरार में से घुस सकता।

दिन में बुशडाग अपनी मांद के अन्दर सोता रहता है। रात में झुण्ड बनाकर यह शिकार के लिए बाहर निकलता है। यह प्रायः दक्षिण अमरीका में पाए जानेवाले गिनिपिग वर्ग के जीवों का शिकार करता है, यथा कैपीबारा।

कैपीबारा अच्छे तैराक होते हैं। जब उनका पीछा किया जाता है, तो वे झट से पानी में गोता लगा जाते है। लेकिन अक्सर ये बच नहीं पाते। बुशडाग उन्हें पानी में भी दबोच सकते हैं।

बुशडाग मारे गए शिकार को अपने बच्चों तक ले जाता है। बच्चे अधीरता से उसकी प्रतीक्षा करते हुए किकियाते हैं।

सघन वनों में वयस्क बुशडाग पिल्लों की तरह किकियाकर आपस में बातें करते हैं। लेकिन दुश्मन को देखते ही ये गुर्राने और बिल्लियों की तरह फुफकारने लगते हैं—मतलब खतरे की चेतावनी देते हैं।

चिड़ियाघरों में बुशडाग अक्सर नहीं दिखलाई पड़ता। अपनी प्रकृति के कारण वह वहां नहीं रह सकता।

अयालवाला भेड़िया

यह सबसे लम्बी टांगोंवाला जंगली "कुत्ता" है। इसका कद और लम्बाई समान होती है। यह जानवर दक्षिण अमरीका के स्तेपियों और साधारण जंगलों में रहता है।

यह एक सुन्दर जानवर है। इसका रंग लाखी होता है, गर्दन पर सफ़ेद धब्बा होता है और टांगों का रंग काला होता है। लगता है जैसे उसने काली जुराबें पहन रखी हों! इसके कन्धे और पीठ पर छोटी अयाल होती है। मुंह लोमड़ी जैसा होता है और हरकतें भी बहुत मिलती-जुलती हैं। इसीलिए दक्षिण अमरीका में इसे बड़ी लोमड़ी कहते हैं।

कुत्तों के परिवार में अयालवाला भेड़िया सबसे ऊंचे कद का जानवर होता है। यह करीब एक मीटर ऊंचा होता है। लेकिन इसकी ताकत और वज़न सामान्य होता है। इसका वज़न लगभग 20 किलो होता है। अयालवाला भेड़िया एक हानिरहित जानवर है। यह भीरु होता है तथा रात के सन्नाटे में अकेला शिकार करता है। यह शिकार के लिए मैदान में भाग-दौड़ करता है – छिपक-लियों, मेढ़कों और चूहेनुमा जानवरों को पकड़ता है। केलों को भी मज़े से खाता है और फलों व गन्नों को भी चबा डालता है। यह जानवर चूहों के बिल खोदने के लिए अगले पंजों की जगह दांतों का इस्तेमाल करता है। कुत्तों से बिल्कुल भिन्न है।

अयालवाले भेड़िये की टांगें लम्बी होते हुए भी यह दूर तक नहीं दौड़ सकता है। यह जल्दी थक जाता है। फुर्तीला घोड़ा इसे दौड़ में आसानी से पकड़ सकता है। लेकिन इसकी छलांग का कमाल देखने योग्य होता है! यह खड़े-खड़े एक ही छलांग में ऊंची झाड़ी को पार करके गायब हो जाता है। शिका-रियों से जान बचाने के लिए यह अक्सर यह तरीका इस्तेमाल करता है।

मादा भेड़िया दो, तीन या अधिक से अधिक पांच बच्चे देती है। बच्चे काले और छोटी टांगोंवाले होते हैं। मां के समान कद्दावर होने तक बच्चे उसके पास रहकर ही पलते हैं।

लकड़बग्घा

अफ़्रीका में भेड़िये नहीं होते, लेकिन लकड़बग्घे को अफ़्रीका का भेड़िया कहा जा सकता है। इनकी आदतें समान होती हैं। ये झुण्ड में रहकर शिकार करते हैं। कभी-कभी ये झुण्ड छोटे होते हैं। लेकिन ऐसे अवसर भी होते हैं जब झुण्ड में सैकड़ों लकड़बग्घे होते हैं। उत्तेजना से भूंकते, धूल उड़ाते और शिकार का पीछा करते हुए ये साठ किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ़्तार से दौड़ते हैं। केवल सबसे फुर्तीले हिरन ही उनसे जान बचाकर भाग सकते हैं।

लकड़बग्घे दिन में शिकार नहीं करते। इन्हें गर्मी परेशान करती है। ये पेड़ की छाया में खर्राटे लेकर सोते हैं, जबकि इनके बच्चे पास ही खेला करते हैं। लेकिन सुबह और शाम को सूंघते और कान खड़ा करके ये अपना चपटा मुंह ज़मीन से सटाये दूर तक घूमा करते हैं।

ऐसे समय में छोटे चिकारे के लिए बेहतर यही होता है कि वह इनके रास्ते से दूर रहे। बड़े हिरन के लिए भी यही उचित होगा, यद्यपि उसकी सींगें बर्छी जैसी पैनी और इतनी लम्बी होती हैं कि सिंह तक इनके प्रहार से घबराता है। और हां, भूख से बेहाल लकड़-बग्घों से सिंह तक अपनी जान बचाता है। ये उसके टुकड़े-टुकड़े कर सकते हैं, ख़ास तौर पर यदि वह बूढ़ा या बहुत छोटा हो।

लकड़बग्घे आपस में काम का बंटवारा कर लेते हैं। कुछ शिकार करते हैं, जबकि दूसरे मांदों की रखवाली और बच्चों की सुरक्षा में जुटते हैं। शिकारी लकड़बग्घे बच्चे और इनकी परिचारिकाओं के लिए आहार जुटाते हैं।

कुत्तों को छोड़कर श्वान परिवार में लकड़बग्घा ही एकमात्र चित-कबरा जानवर है। इसका रंग काला, पीला और सफ़ेद होता है। हरेक पर अलग-अलग तरह के धब्बे होते हैं। यहां तक कि दो लकड़बग्घे एक जैसे नहीं होते।

लाल भेड़िया

तुमको याद है कि मौगली ने अपने मित्रों, स्लेटी भेड़ियों की मदद लाल भेड़ियों से जूझने में की थी?

इन हिंसकों को लाल कुत्ते भी कहते हैं। लाल भेड़िया कहीं-कहीं साइबेरिया के पहाड़ों, पामीर, त्यानशान पर्वत, चीन, भारत और जावा व सुमात्रा द्वीपों में पाए जाते हैं।

लाल भेड़िये लकड़बग्घों जैसा तेज़ नहीं दौड़ सकते। इसीलिए ये झपट कर शिकार नहीं कर पाते। लेकिन ये बकरों, जंगली सूअरों, हिरनों या जंगली भेड़ों का घण्टों तक पीछा किया करते हैं। अन्त में जब जानवर थक जाते हैं, तो लाल भेड़ियों का झुण्ड उन्हें घेर कर मार डालता है।

कहते हैं कि लाल भेड़ियों के झुण्ड से बाघ भी नहीं टकराता। भेड़िये ही उस पर भारी पड़ते हैं।

हिमालय का भालू तो लाल भेड़ियों की गन्ध पाते ही तेज़ी से भाग लेता है। गन्ध काफ़ी तेज़ होने का मतलब है लाल भेड़ियों का आसपास मौजूद होना। ऐसे में भालू पेड़ पर चढ़ जाता है।

अकेले हाथी के अलावा कोई अन्य जानवर लाल भेड़िये के खूंख्वार हमले का सामना नहीं कर सकता।

लाल भेड़िया मनुष्य पर कभी हमले नहीं करता। यह गांव के करीब भी नहीं आता और न ही पालतू जानवरों पर हमले करता है।

यह एक दुर्लभ जानवर है। सोवियत संघ में इनका शिकार करने पर रोक लगा दी गई है।

कोरसैक

कोरसैक को पहली नज़र में देखकर कहा जा सकता है, "क्या खूब! यह तो एक नन्ही सी लोमड़ी है!"

हां, कोरसैक एक नन्ही लोमड़ी सा दिखलाई पड़ता है। लेकिन कुछ वैज्ञानिकों का यह विचार है कि कोरसैक साधारण लाल लोमड़ी की तुलना में ध्रुवीय लोमड़ी का निकटतम संबंधी है।

कोरसैक एशिया में पाया जाता है। सोवियत संघ में यह जानवर केवल दक्षिण-पूर्वी भाग में पाया जाता है। लेकिन पुराने ज़माने में रूस के युरोपीय भाग के गांवों और कस्बों में भी ये जानवर पालतू कुत्तों की तरह घरों में पाले जाते थे।

यह एक बहुत प्यारा जानवर होता है। अपने मालिक के प्रति ये वफ़ादार और मृदुल होते हैं, उसके साथ खेलना पसन्द करते हैं। ये बड़े फुर्तीले होते हैं, झाड़ियों और पेड़ों पर चढ़ सकते हैं। इनका एक बड़ा लाभ यह है कि ये चूहों को मार डालते हैं। यह कोई आसान बात नहीं है। कुछेक बड़े चूहों को तो बिल्ली भी न ही मार पाती।

स्वतंत्र जीवन में कोरसैक विशेष तरह का भीरु और चौकन्ना रहनेवाला जानवर है। दिन के समय यह बाहर नहीं निकलता, मांद में पड़ा सोता रहता है।

अपनी मांद यह खुद नहीं खोदता। आखिर ऐसा क्यों करे? यह बिज्जू या लाल लोमड़ी की खाली मांद में रह लेता है।

काइओट की तरह कोरसैक को कभी-कभी मांद ढूंढ़ने में परेशानी होती है। ऐसी स्थिति में दो मादा कोरसैक अपनी-अपनी संतानों के साथ एक ही मांद के अन्दर रह लेती हैं। इसमें कोई बुराई नहीं अगर दोनों मादा कोरसैक के दो-दो बच्चे हों। लेकिन जब एक-एक मां के ग्यारह-ग्यारह बच्चे हों तो? पर दोनों परिवारों के बीच कभी झगड़ा नहीं होता। दोनों परिवार सुलह से मिल-जुलकर रहते हैं।

बच्चे दीर्घ-काल तक माता-पिता के साथ नहीं रहते। पतझड़ के मौसम में ये उनसे अलग हो जाते हैं।

फ़ेनेक

यह एक छोटा जानवर है। फ़ेनेक का कद बिल्ली के बच्चे के बराबर होता है। लेकिन इसके कान चरवाहों के बड़े कुत्तों के कान जैसे होते हैं।

यह आकर्षक जानवर दुनिया की सबसे गर्म जगह सहारा मरुस्थल में पाया जाता है।

तपते हुए सूरज की गर्मी से बचने के लिए फ़ेनेक दिन भर अपनी गहरी और ठण्डी मांद में पड़े रहते हैं। केवल शाम के समय ये सभी एकसाथ बाहर निकल पड़ते हैं और चुपचाप अपनी मांद के पास बैठकर दिन ठण्डा होने की प्रतीक्षा करते हैं। यदि सूरज अभी तप रहा होता है तो ये लेटकर सिर को अपनी झाड़ीदार पूंछ से ढंक लेते हैं, जैसे वह दुम नहीं, बल्कि कोई छत्र हो।

ठंडक पड़ते ही फ़ेनेक अपने कान खड़े कर लेते हैं। "चीं, चीं," कोई आहट मिली! छिपकली के रेत पर रेंगने और सरकने की आहट या टिड्डे के उछलने की आवाज़ सुनते ही यह उस ओर धीरे से बढ़ लेता है। रेगिस्तानी लावा पक्षी भी नींद में पंख फड़फड़ा सकता है। आखिर इससे कितना शोर-शराबा हो सकता है। लेकिन फ़ेनेक यह भली प्रकार जानता है कि पक्षी कहां छिपा होगा। यह फिर से दबे पांव परछाईं की तरह सरकता है, ठहरता ... और छलांग लगाता है! वह रहा! शिकार उसके दांतों के बीच तड़फड़ा रहा होता है।

नदी या झील के किनारे फ़ेनेक पानी पीने के लिए आते हैं। कुछ तो काफ़ी दूर से आते हैं। सभी प्यास बुझाना चाहते हैं। लेकिन फ़ेनेक बिना पानी के कई-कई दिनों तक जीवित रह सकता है।

अफ़्रीका में पतझड़ के प्रारम्भिक दिनों में फ़ेनेक बच्चे देते हैं।

बड़े कानवाला कुत्ता

दक्षिण अफ़्रीका में फ़ेनेक नहीं होते। लेकिन वहां एक जानवर रहता है जिसके बड़े-बड़े कान तथा तीव्र श्रवण-शक्ति होती है। इस जानवर के कान फ़ेनेक की तरह लम्बे होते हैं। पर यह फ़ेनेक से दुगना बड़ा होता है।

लेकिन इस जानवर के कानों से कहीं ज़्यादा उल्लेखनीय हैं उसके दांत! बड़े कानवाले कुत्ते के दांतों की संख्या पचास होती है। इस जानवर की तरह का कोई अन्य थलचर नहीं है जिसके दांतों की संख्या इतनी अधिक हो। आस्ट्रेलिया का एकमात्र चींटीखोर ही उसकी बराबरी कर सकता है।

चींटीखोर की तरह ही बड़े कानवाला कुत्ता भी तमाम कीड़े-मकोड़ों को चट कर जाता है। लेकिन इनके अतिरिक्त यह चूहों, छिपकलियों और पक्षियों को भी अपना आहार बना लेता है। कभी-कभी वह फलों का ज़ायका भी लेता है।

बड़े कानवाला कुत्ता डरपोक होता है। वह दिन के उजाले में दिखलाई नहीं पड़ता, ज़मीन के अन्दर मांदों या घनी झाड़ियों में छिपा रहता है। शिकार के लिए रात में बाहर निकलता है।

बड़े कानवाला कुत्ता झुण्ड में रहना पसन्द नहीं करता। ये जानवर या तो अकेले घूमा करते हैं या नर और मादा साथ-साथ होते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में तुमने चौदह जानवरों के बारे में रोचक जानकारी प्राप्त की है। यह सभी जानवर श्वान परिवार के सदस्य हैं। इस परिवार में कुल पैंतीस सदस्य होते हैं। बड़े हो जाने पर तुम जानवरों के बारे में लिखी गई विशेष पुस्तकों से इन सभी के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकोगे।

И. Акимушкин
ЭТО ВСЁ СОБАКИ
На языке хинди

I. Akimushkin
THE DOG FAMILY. STORIES
In Hindi

ISBN 5-05-001497-2